वर्ष 27 अष्ठम् अंक

मार्च 2015

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 महत्वाकांक्षी व्यक्ति ही श्रेष्ठ मानव बनते हैं

विशेष स्तम्भ

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान

17 आर्थिक परिदृश्य

22 राष्ट्रीय परिदृश्य

25 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

29 क्रीड़ा जगत्

33 35वें राष्ट्रीय खेलों का केरल में सफल आयोजन

34 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

35 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

38 सारभूत तत्व कोष

लेख

41 अन्तरिक्ष विज्ञान लेख–2014 में अन्तरिक्ष में भारत की कामयाबी

44 समसामयिक लेख–प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नेपाल यात्रा

45 संवैधानिक लेख–राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग

हल प्रश्न-पत्र

47 बिहार पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा, 2014

एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) परीक्षा, (प्रथम पाली) 2014

52 सामान्य बुद्धिमत्ता

56 English Language

58 संख्यात्मक अभिरुचि

64 सामान्य जानकारी

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया लिपिकीय संवर्ग परीक्षा, 2014

66 तर्कशक्ति परीक्षा

70 General English

73 संख्यात्मक अभियोग्यता

78 सामान्य जागरूकता

80 मार्केटिंग और कम्प्यूटर ज्ञान

83 **छत्तीसगढ़ शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2014 (द्वितीय प्रश्न-पत्र)**

आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक पी.ओ./ मैनेजमेंट ट्रेनीज सम्मिलित लिखित परीक्षा, 2014

97 तर्कशक्ति परीक्षा

103 English Language

107 संख्यात्मक अभिक्षमता

114 सामान्य जागरूकता

118 कम्प्यूटर ज्ञान

120 रेलवे भर्ती सैल (गोरखपुर) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

126 वार्षिक रिपोर्ट 2013-14 – अनुसंधान एवं विकास क्षेत्र में उर्वरक तथा पेट्रोकैमिकल्स के बढ़ते चरण- एक दृष्टि में

128 ज्ञान वृद्धि कीजिए

129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

महत्वाकांक्षी व्यक्ति ही श्रेष्ठ मानव बनते हैं

– साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

''कान वे कान हैं, जिसने तेरी आवाज सुनी।
आँख वे आँख हैं, जिसने तेरा जलवा देखा।।''

इस जीवन में, जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है उसकी आकांक्षा करना महत्वाकांक्षा है. ब्रह्माण्ड के विराट स्वरूप को आत्मा में, स्वयं में उजागर करने की अभीप्सा ही वास्तविक महत्वाकांक्षा है. 'महत्वाकांक्षा' शब्द की सही समझ के अभाव में कई लोग इसका नकारात्मक प्रयोग भी करते रहते हैं. अधिकांश जन महत्वाकांक्षा शब्द का अर्थ दूसरों से स्वयं को महत्वपूर्ण साबित करने की इच्छा के रूप में करते हैं. औरों से खुद को श्रेष्ठ साबित करने की इच्छा महत्वाकांक्षा शब्द का विकृत अर्थ है, या इसे यूँ कहें कि यह अपने आप में ही क्षुद्र आकांक्षा है. हीन मानसिकता की ग्रन्थि से पीड़ित होने की सूचक है. हीन मनोग्रंथि (Inferiority complex) से पीड़ित व्यक्ति हर जगह स्वयं को महत्वपूर्ण व श्रेष्ठ साबित करने की जुगाड़ में लगा रहता है. वह हर सभा में बैठकर अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता रहता है. उसकी सारी मेहनत इस लक्ष्य को लेकर ही होती है कि वह जहाँ कहीं जाए सभी का ध्यान आकर्षित करने के लिए क्या नया करे ? चाहे उसके लिए उसे कोई भी कीमत अदा करनी पड़े, किन्तु यह सोच व प्रयास एक तुच्छ, संकीर्ण दिमाग की उपज है, जो दंभी है, स्वार्थी है, पारस्परिक सद्भावों से हीन है, औरों के दोषों का अन्वेषक है, ऐसा व्यक्ति महत्वाकांक्षी नहीं है, बल्कि हीनाकांक्षी है. **'महत्व' औरों से श्रेष्ठ बनने में नहीं है. 'महत्व' अपने स्वरूप को श्रेष्ठतम दर्जे तक विकसित करने में है.** स्वयं को ब्रह्माण्डीय चेतना के साथ एकाकार अनुभव कर पाना ही वास्तविक महत्वाकांक्षा है.

हर युग में ऐसे लोग कम ही हुए हैं, जो क्षुद्र इच्छाओं के पार भी स्वयं को ले जाने के लिए पुरुषोचित रहे हों. प्रायः व्यक्ति रोटी-कपड़ा-मकान, पद-पैसा-परिवार व सामाजिक प्रतिष्ठा की जुगाड़ में ही जिन्दगी भर लगा रहता है. उसको कुछ लोगों से तारीफ पाने में ही अपनी सफलता सन्निहित प्रतीत होती है. कुछ सौभाग्यशालियों में ही विराट की आकांक्षा जागृत होती है.

वास्तविक अर्थों में ''विराट की जिन्हें आकांक्षा है, वही महत्वाकांक्षी है.''

यह विराट है हमारा वास्तविक स्वरूप, जहाँ कोई 'मैं', 'मेरा' नहीं बचता. जहाँ सकल संसार आत्मवत् अनुभूत होता है. न कोई अपना, न कोई पराया, न तेरा, न मेरा–इस अवस्था की उपलब्धि हमारे इस जीवन का वास्तविक ध्येय है. यह अन्तर की अवस्था है, इसे भौतिक साधनों के संग्रह से नहीं पाया जा सकता है. भौतिक साधनों की उपलब्धियाँ हमारे लिए साध्य नहीं हैं. यदि आन्तरिक शान्ति गिरवी रख कर इन्हें इकट्ठा किया जा रहा है, तो ये उपलब्धियाँ एक दिन विनाशकारी साबित हो जाएंगी.